Sl.No of Q.P : 8813 Roll No | | | | | | | | | | | |

Unique Paper Code : 2051202

Name of the Paper : Aadikalin Aur Bhaktikalin Kavya

F-4

Semester : II

Name of the Course : B.A.(H) Hindi

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या करते हुए उनके रचना कौशल पर विचार कीजिए : 9 , 9

(क) को बिरहिनी को दुख जाँणै हो।।
जा घट बिरहा सोइ लखि है, कै कोई हरिजन मानै हो।
रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही ओखद जाँणै हो।
बिरह दरद उरि अंतरि माँही, हरि विणि सब सुख काँणे हो।
दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत, बसी सुत माँनै हो।
चात्रग स्वाति बूँद मन माँही, पीय उकलाँणै हो।
सब जग कूड़ो कंटक दुनिया, दरध न कोइ पिछाँणै हो।
मीराँ के पति रमैया, दूजो नहिं कोई छांणै हो।।

अथवा

झगरा एक नवेरो राम, जैं तुम्ह अपने जन सूँ कॉम ।।
ब्रह्म बडा कि जिन रू उपाया, बेद बडा कि जहाँ थैं आया ।
यह मन बडा कि जहाँ मन मानैं, राम बडा कि रामहि जान ।
कहै कबीर हूँ खरा उदास, तीरथ बडे कि हरि के दास ।।

(ख) संग न साथी मींत न अहा। को रे संदेस पिता 'सेउं' कहा।
'तेहि ठाएं' नहि आहि सयानां। को रे सींच को पानि जो आनां।
को 'उचाइ' रस बचन सुनावै। पेम कथा कहि को रे 'जगावै'।
'धाइ' आइ जो देखइ पासा। मुख मेंमर तन आहि न सांसा।
अमिअ सींचि बैठारि 'स(सं) भारी। काह देखि तुइं गा बिसंभारी।
कै सपनां कै सौतुख कै 'छर लागा तोहिं आहि।
रोगिया बेदन कहै बैद सो ओखद लावै ताहि।।

अथवा

निरगुन कौन देस कौ बासी ?

मधुकर कहि समुझाई सौंह दै, बूझति सॉचि न हाँसी ।।

को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि , को दासी ?

कैसे बरन भेष है कैसो, किहिं रस में अभिलाषी ?

पावैगौ पुनि कियौ आपनौ , जो रे करैगौ गाँसी ।

सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी ।।

2. अमीर खुसरो के काव्य में अभिव्यक्त लोक–जीवन पर प्रकाश डालिए। 14

अथवा

सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा में 'मृगावती' का स्थान निर्धारित कीजिए।

3. 'कबीर सामाजिक चेतना के कवि हैं' इस कथन की पुष्टि कीजिए। 14

अथवा

'कवितावली के बालकांड' के काव्य–सौंदर्य पर विचार कीजिए।

4. मीरा की काव्य–भाषा पर प्रकाश डालिए। 14

अथवा

सूरदास के काव्य में चित्रित वात्सल्य रस की विशेषताएँ लिखिए।

5. निम्नलिखित पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए: 15

(क) कबीर के राम

अथवा

सूफी काव्य में प्रेम–तत्त्व

(ख) अष्टछाप

अथवा

तुलसी की समन्वय भावना